

ॐ

~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम्

विषय- हिन्दी

दिनांक—05/09/2020 कृतिका(रीढ़ की हड्डी)

~~~~~

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

रीढ़ की हड्डी

--जगदीश चन्द्र माथुर

(सन् 1917-1978)

गो. प्रसाद : पढ़ाई-वढ़ाई की वजह से तो नहीं है कुछ?

रामस्वरूप : नहीं साहब, वह तो मैंने अर्ज किया न ।

गो. प्रसाद : हूँ। (संतुष्ट होकर कुछ कोमल स्वर में) बैठो बेटी।

रामस्वरूप : वहाँ बैठ जाओ उमा, उस तख्त पर, अपने बाजे-वाजे के पास।(उमा बैठती है।)

गो. प्रसाद : चाल में तो कुछ खराबी है नहीं। चेहरे पर भी छवि है।.. हाँ, कुछ गाना-बजाना सीखा है?

रामस्वरूप : जी हाँ, सितार भी, और बाजार भी सुनाओ तो उमा एकाध गीत सितार के साथ।

(उमा सितार उठाती है। थोड़ी देर बाद मीरा का मशहूर गीत 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई' गाना शुरू कर देती है। स्वर से जाहिर है कि गाने का अच्छा ज्ञान है। उसके स्वर में तल्लीनता आ जाती है, यहाँ तक कि उसका मस्तक उठ जाता है।उसकी आँखें शंकर की झेंपती-सी आँखों से मिल जाती हैं और वह गाते-गाते एक साथ

रुक जाती है।)

रामस्वरूप : क्यों, क्या हुआ? गाने को पूरा करो उमा। गो

गो.प्रसाद : नहीं-नहीं साहब, काफ़ी है। लड़की आपकी
अच्छा गाती है।

(उमा सितार रखकर अंदर जाने को उठती है।)

गो. प्रसाद : अभी ठहरो, बेटा ।

रामस्वरूप : थोड़ा और बैठी रहो, उमा! (उमा बैठती है।)

गो. प्रसाद : (उमा से) तो तुमने पेंटिंग-वेंटिंग भी...

उमा : (चुप)

रामस्वरूप : हाँ, वह तो मैं आपको बताना भूल ही गया।

यह जो तस्वीर टँगी हुई है, कुत्ते वाली इसी ने खींची है।

और वह उस दीवार पर भी।

गो. प्रसाद : हूँ! यह तो बहुत अच्छा है। और सिलाई
वगैरह?

रामस्वरूप:

रामस्वरूप : सिलाई तो सारे घर की इसी के ज़िम्मे रहती है, यहाँ तक कि मेरी कमीजें भी। हँ...हँ...हँ।

क्रमशः

छात्र कार्य-दी गई पाठ्य सामग्री का शुद्ध-शुद्ध वाचन करें ।

धन्यवाद

कुमारी पिकी "कुसुम"

